International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 10, October- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

महात्मा गांधी के जीवन रेखाचित्र और सामान्य दर्शन का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Goodu Kumar Singh, Research Scholar, Department of Education, Himalayan Garhwal University

Dr. Alka Kumari, Assistant Professor, department of Education, Himalayan Garhwal University, Uttarakhand

सार

महात्मा गांधी ने शिक्षा को सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त अन्याय, हिंसा और असमानता के प्रति राष्ट्र की अंतरात्मा को जगाने के साधन के रूप में देखा है। गांधीजी ने शिक्षा की एक बहुत व्यापक–आधारित अवधारणा दी और बच्चों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण और सामंजस्यपूर्ण विकास को शिक्षा का मुख्य उद्देश्य माना। सर्वांगीण विकास का अर्थ है सिर, हृदय और हाथ का विकास– न कम, न अधिक। सच्ची शिक्षा वह है जो बच्चों के आध्यात्मिक, बौद्धिक और शारीरिक संकायों को खींचती और उत्तेजित करती है उनकी शिक्षा की अवधारणा मानव व्यक्तित्व के सभी पहलुओं–शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, आध्यात्मिक आदि के संतुलित और सामंजस्यपूर्ण विकास के लिए है। अंतिम लक्ष्य यानी सत्य को प्राप्त करने के लिए व्यक्ति। गांधीजी ने शिक्षा के चरित्र विकास के उद्देश्य पर जोर दिया और उन्होंने चरित्र निर्माण को शिक्षा का उपयुक्त आधार माना। इसलिए, सभी ज्ञान का अंत चरित्र का निर्माण होना चाहिए। उन्होंने चरित्र को उसके नैतिक और आध्यात्मिक पहलू सहित संपूर्ण व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति के रूप में माना। गांधीजी के अनुसार, चरित्र और पवित्रता रहित चरित्र के बिना शिक्षा अच्छी नहीं होगी। शिक्षा की प्रचलित प्रणाली चरित्रोन्मुखी नहीं है, बल्कि सूचना उन्मुख है। यह उपभोक्तावादी है और व्यक्ति को स्वार्थी, आत्मकेंद्रित और निंदक बनाता है। यह तर्क को तेज करता है, लेकिन हृदय को कठोर करता है। यह सत्य, प्रेम, ईमानदारी, नम्रता, करुणा, सहनशीलता और न्याय जैसे बुनियादी मूल्यों पर बहुत कम या कोई जोर नहीं देता है। यह किसी को अपने अधिकारों के बारे में जागरूक करता है, कर्तव्यों के बारे में नहीं। ऐसी परिस्थितियों में, चरित्र विकास और व्यक्तिगत और सामाजिक उद्देश्यों के संश्लेषण के बारे में गांधीजी के विचार काफी प्रासंगिक हैं क्योंकि उन्होंने दोनों के बीच कोई संघर्ष नहीं पाया और उनके उचित संश्लेषण में विश्वास किया। उनका विचार था कि यदि व्यक्ति अच्छे हैं, तो पूरा समाज अच्छा होना चाहिए। एसीसी उसके लिए, यदि हम व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करने में सफल होते हैं, तो समाज स्वयं की देखभाल करेगा। इसलिए, व्यक्तिगत और सामाजिक उद्देश्यों के बीच एक उचित संतुलन तलाशने और छात्रों के चरित्र को वांछित तर्ज पर विकसित करने की आवश्यकता है और इसके लिए स्कूल के माहौल को स्वस्थ और अनुकूल बनाना होगा जिसमें शिक्षकों को एक अनुकरणीय भूमिका निभानी होगी। और छात्रों के लिए रोल मॉडल बनें।

प्रमुख शब्द : महात्मा गांधी, चरित्र, विकास और व्यक्तिगत, सामाजिक, सत्य, प्रेम, ईमानदारी, नम्रता, करुणा, सहनशीलता और न्याय

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 10, October- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

परिचय

महात्मा गांधी का जीवन रेखाचित्र

जन्म और पितृत्व

मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को काठियावाड़ (अब गुजरात राज्य का एक हिस्सा) के एक तटीय शहर पोरबंदर में हुआ था। वह अपने माता–पिता, करमचंद और पुतलीबाई के सबसे छोटे बच्चे थे। गांधी परिवार मोध बनिया समुदाय से थे। वे मूल रूप से किराना व्यवसायी थे। हालाँकि, मोहन के दादा उत्तमचंद, पोरबंदर राज्य के दीवान बन गए। मोहन के पिता करमचंद ने पोरबंदर, राजकोट और वंकानेर राज्यों के दीवान के रूप में भी काम किया। करमचंद के पास बहुत कम शिक्षा थी, लेकिन निर्णय की चतुराई और अनुभव के माध्यम से प्राप्त व्यावहारिक ज्ञान है। उनकी चौथी पत्नी पुतलीबाई उनसे 25 वर्ष छोटी थीं। वह ज्यादा पढ़ी–लिखी नहीं थी, लेकिन व्यावहारिक मामलों की अच्छी जानकारी रखती थी। महल की महिलाएं उसकी सलाह को महत्व देती थीं। वह गहरी धार्मिक और अंधविश्वासी थीं और उनमें दृढ़ इच्छा शक्ति थी। गांधीजी की अपने पिता के प्रति बहुत भक्ति थी और वे अक्सर राज्य की समस्याओं के बारे में चर्चा में उपस्थित रहते थे। गांधी परिवार के पारसी और मुस्लिम मित्र थे और जैन भिक्षु नियमित रूप से यहां आते थे। इस प्रकार गांधीजी को धार्मिक मामलों के बारे में भी चर्चा सुनने का अवसर मिला।

बचपन

गांधी जी ने पोरबंदर के प्राथमिक विद्यालय में पढ़ाई की। जब वे सात साल के थे, तब उनका परिवार राजकोट आ गया। वह एक औसत दर्जे का छात्र था, शर्मीला था और कंपनी से परहेज करता था। वह पाठ्य पुस्तकों के अलावा बहुत कम पढ़ता था और उसे बाहरी खेलों से कोई लगाव नहीं था। हालाँकि, वह सच्चा, ईमानदार और संवेदनशील था और अपने चरित्र के बारे में सतर्क था। श्रवण और हरिश्चंद्र के नाटकों ने उन पर गहरी छाप छोड़ी। उन्होंने उसे किसी भी कीमत पर सच्चा होना और भक्ति के साथ अपने माता–पिता की सेवा करना सिखाया।

अर्थव्यवस्था और सुविधा के लिए उन्होंने अपने भाई और चचेरे भाई के साथ शादी की थी। तब वह केवल 13 वर्ष के थे। उनकी पत्नी कस्तूरबाई भी उसी उम्र की थीं। वह अनपढ़ लेकिन दृढ़ इच्छाशक्ति वाली थी। वह उसे पढ़ाना चाहता था लेकिन समय नहीं मिला। उनके अनुभव ने बाद में उन्हें बाल–विवाह का कड़ा आलोचक बना दिया।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 10, October- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

गांधीजी ने राजकोट के हाई स्कूल में प्रवेश लिया। वह शिक्षकों द्वारा पसंद किया जाता था और अक्सर पुरस्कार प्राप्त करता था। उन्होंने शारीरिक प्रशिक्षण और हस्तलेखन की उपेक्षा की, लेकिन बाद में उन्होंने पछताया और जीवन में उनके महत्व को महसूस किया। मोहन के पिता की मृत्यु तब हुई जब वह 16 वर्ष के थे। मोहन ने 1887 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। उन्होंने भावनगर के समालदास कॉलेज में दाखिला लिया, लेकिन पहले कार्यकाल के बाद छोड़ दिया। उस समय, मावजी दवे, एक विद्वान ब्राह्मण, एक पुराने मित्र और परिवार के सलाहकार ने उन्हें कानून का अध्ययन करने के लिए इंग्लैंड जाने की सलाह दी। उन्होंने अपना मन बना लिया और परिवार के सदस्यों के प्रतिरोध पर काबू पा लिया। उसने अपनी माँ के डर को दूर करने के लिए शराब, महिलाओं और मांस को नहीं छूने का संकल्प लिया और फिर वह अपनी पत्नी और एक बेटे को छोड़कर सितंबर 1888 में बॉम्बे से रवाना हुआ। जाति के बुजुर्ग उनके इंग्लैंड जाने के खिलाफ थे और उन्होंने उन्हें जाति से बहिष्कृत कर दिया।

इंग्लैंड में गांधीजी

4 सितंबर, 1888 को गांधी इंग्लैंड के लिए रवाना हुए। उन्हें 6 नवंबर, 1888 को आंतरिक मंदिर में एक छात्र के रूप में भर्ती कराया गया था, और जून 1890 में लंदन विश्वविद्यालय में मैट्रिक किया गया था। उन्होंने फ्रेंच और लैटिन, भौतिकी और रोमन कानून सीखा। उन्होंने लैटिन में रोमन कानून पढ़ा और कई किताबें लाए। उन्होंने अपनी अंग्रेजी में सुधार किया। लंदन में अपने प्रवास के दौरान, उन्होंने विभिन्न धर्मों पर विभिन्न पुस्तकें पढ़ीं, जिन्होंने बाद में उन्हें अपनी धार्मिक विचारधारा बनाने में मदद की। गांधी ने पहली बार सर एडविन अर्नोल्ड के अनुवाद में गीता पढ़ी थी, जब वे द्वितीय वर्ष के कानून के छात्र थे। वे गीता की भावना से बहुत प्रभावित हुए। इससे पहले उन्होंने गीता भी नहीं पढ़ी थी। उन्होंने एडविन अर्नोल्ड की 'द लाइट ऑफ एशिया', ब्लावात्स्की की 'की ऑफ थियोसोफी' और बाइबिल भी पढ़ी। गीता और द न्यू टेस्टामेंट ने उन पर गहरी छाप छोड़ी। त्याग और अहिंसा के सिद्धांतों ने उन्हें बहुत आकर्षित किया। उन्होंने जीवन भर धर्मों का अध्ययन जारी रखा। उन्हें अंतिम परीक्षा पास करने में कोई कठिनाई नहीं हुई। 10 जून, 1891 को बार में बुलाया गया, उन्होंने 11 जून को उच्च न्यायालय में दाखिला लिया और जून को भारत के लिए रवाना हुए। 12. उनकी इंग्लैंड में एक भी अतिरिक्त दिन बिताने की कोई इच्छा नहीं थी।

दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी

गांधीजी बैरिस्टर बनकर भारत लौट आए, लेकिन उन्हें भारतीय कानून के बारे में कुछ नहीं पता था। वकील मुकदमों को लेने के लिए दलालों को कमीशन देते थे। गांधीजी को यह पसंद नहीं था। इसके अलावा वह शर्मीला था और अदालत में बहस करने के एक अवसर ने उसे बेचैन कर दिया। वह एक

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 10, October- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

निराश और निराश 'संक्षिप्त बैरिस्टर' बन गया। इसके बाद उन्होंने आवेदन पत्र और स्मारक बनाने का काम शुरू किया लेकिन यह काम उन्हें रास नहीं आया। अध्यापन में उनकी विशेष योग्यता थी और वे परिवार के सभी बच्चों को पढ़ाते थे और बाद में उन्होंने एक स्कूल में शिक्षक के पद के लिए आवेदन किया था लेकिन उन्हें इस आधार पर अस्वीकार कर दिया गया था कि वह उस पद के लिए योग्य नहीं थे, क्योंकि उन्होंने स्नातक नहीं था। उस समय दक्षिण अफ्रीका की एक फर्म दादा अब्दुल्ला एंड कंपनी ने एक मामले में उनकी मदद मांगी थी। गांधीजी उत्सुकता से सहमत हुए और अप्रैल १८९३ में दक्षिण अफ्रीका के लिए रवाना हुए।

गांधीजी अपने आगमन के बाद से ही दक्षिण अफ्रीका में नस्लीय भेदभाव की चुभन महसूस करने लगे क्योंकि भारतीय समुदाय अज्ञानी और विभाजित था, और इसलिए इससे लड़ने में असमर्थ थे। अपने केस के सिलसिले में गांधी जी को प्रिटोरिया जाना है। वह प्रथम श्रेणी में यात्रा कर रहा था लेकिन एक श्वेत यात्री और रेलवे अधिकारियों ने उसे प्रथम श्रेणी के डिब्बे से बाहर निकलने के लिए कहा। गांधीजी ने मना कर दिया, जिसके बाद उन्हें मारित्ज़बर्ग स्टेशन के प्लेटफार्म पर उनके सामान के साथ बाहर फेंक दिया गया। भीषण सर्द रात थी। गांधी जी ने काँपते हुए और उग्र सोच में रात बिताई। उन्होंने अंततः दक्षिण अफ्रीका में रहने, नस्लीय भेदभाव से लड़ने और कठिनाइयों को झेलने का मन बना लिया। यह एक ऐतिहासिक फैसला था। इसने गांधीजी को बदल दिया। उन्हें कुछ दूरी एक स्टेज–कोच से भी तय करनी थी। इस यात्रा के दौरान भी उनका अपमान किया गया और पीटा गया। प्रिटोरिया पहुँचकर गाँधी जी ने स्थानीय भारतीयों की एक सभा बुलायी। वहां उन्होंने भारतीयों की स्थिति के बारे में बहुत कुछ सीखा। यहीं पर उन्होंने अपना पहला सार्वजनिक भाषण दिया और एक संघ के गठन का सुझाव दिया। उन्होंने इसके लिए अपनी सेवाएं देने की पेशकश की।

गांधीजी ने बाद में उस मामले को सुलझा लिया, जिसके लिए वे मध्यस्थता के माध्यम से आए हैं। इसके बाद उन्होंने घर लौटने का फैसला किया। लेकिन विदाई पार्टी में उन्हें भारतीय मताधिकार को प्रतिबंधित करने वाले एक विधेयक के बारे में पता चला। गांधी ने सोचा कि इसके गंभीर निहितार्थ हैं। तब लोगों ने उस पर कुछ देर रुकने के लिए दबाव डाला और वह मान गया। गांधीजी की पहली बड़ी लड़ाई शुरू हो चुकी थी। उन्होंने सभाओं को संबोधित किया, विधानसभा में याचिका दायर की और हस्ताक्षर अभियान चलाया। उन्होंने वहां नियमित कानूनी अभ्यास भी शुरू किया, और जल्द ही एक सफल और अग्रणी वकील बन गए। निरंतर आंदोलन के लिए एक स्थायी संगठन की आवश्यकता थी और नेटाल भारतीय कांग्रेस का जन्म हुआ।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 10, October- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

गांधीजी अपने परिवार को ले जाने और दक्षिण अफ्रीका में अपने लोगों के दुखों की खबर फैलाने के लिए १८९६ में भारत लौट आए। उसी साल दिसंबर में, उन्हें एक बार डरबन लौटने के लिए एक केबल मिली। गांधीजी अपनी पत्नी, दो पुत्रों और भतीजे के साथ वापस चले गए। गांधीजी वहां अपना काम जारी रखते हैं, नेटाल इंडियन कांग्रेस को संगठित करते हैं और मजदूरों की मदद करते हैं। वे १९०१ के अंत में भारत गए, और जरूरत पड़ने पर दक्षिण अफ्रीका लौटने का वादा किया। उन्होंने व्यापक रूप से यात्रा की और गोपाल कृष्ण गोखले के साथ मिलकर काम किया, जिन्हें वे अपना गुरु मानते थे। वे बम्बई में बसने ही वाले थे कि उन्हें दक्षिण अफ्रीका से वहाँ जाने के लिए एक आवश्यक तार मिला। अपने वचन के अनुसार, वह जल्दी से वापस चला गया। इस बार उन्हें 12 साल तक भारत नहीं देखना था।

गांधी जी फिर दक्षिण अफ्रीका गए। उन्होंने पाया कि भारतीयों की स्थिति खराब हो गई है और इसलिए उन्हें खुद को सार्वजनिक कार्य के लिए समर्पित करना पड़ा। इसी समय एक मित्र मदनजीत गांधीजी के पास इंडियन ओपिनियन नामक पत्रिका शुरू करने का प्रस्ताव लेकर आया था। गांधीजी को यह विचार पसंद आया और 1904 में पत्रिका शुरू की गई। हर हफ्ते गुजराती और अंग्रेजी में प्रकाशित होने वाले इस जर्नल ने उनके आदर्शों को प्रतिबिंबित किया और भारतीय पाठकों को उदार शिक्षा दी। पूर्ण स्पष्टता के साथ, गांधी ने उन्हें उनकी विफलताओं और पूर्वाग्रहों की ओर इशारा किया। इंडिया ओपिनियन ने यूरोपीय लोगों को दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के सामने आने वाली कठिनाइयों की एक सही तस्वीर भी दी। उस वर्ष एक और बात यह हुई कि गांधी जी एच.एस.एल. पोलक, तब द क्रिटिक के उप–संपादक थे। दोनों जल्द ही दोस्त बन गए, क्योंकि जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण समान था। पोलक ने गांधीजी को जॉन रस्किन की किताब अनटू दिस लास्ट की एक प्रति भेंट की। अर्थशास्त्र पर इस पुस्तक ने कई नए विचार प्रस्तुत किए, और इसने गांधीजी को बहुत प्रभावित किया। अनटू दिस लास्ट ने गांधीजी पर जबरदस्त प्रभाव डाला। उन्होंने स्वयं अपनी आत्मकथा में लिखा है, 'इन पुस्तकों में से जिसने मेरे जीवन में तात्कालिक और व्यावहारिक परिवर्तन लाया, वह थी अनटू दिस लास्ट। मैंने बाद में इसका गुजराती में अनुवाद किया, इसे 'सर्वोदय' (सभी का कल्याण) का नाम दिया।

फीनिक्स समझौता

वह रस्किन के विचारों से बहुत प्रभावित हुए और उन्हें तुरंत अमल में लाने का फैसला किया। गांधीजी ने फीनिक्स स्टेशन के पास कुछ जमीन खरीदी और 1904 के मध्य में फीनिक्स बस्ती की स्थापना की। बसने वालों को खुद को और प्रिंटिंग प्रेस को समायोजित करने के लिए संरचनाएं खड़ी करनी पड़ती हैं। 'इंडियन ओपिनियन' को फीनिक्स में स्थानांतरित कर दिया गया था। फीनिक्स सेटलमेंट, जिसे गांधी ने

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 10, October- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

1904 में दक्षिण अफ्रीका में शुरू किया था, बाद में महान शैक्षिक महत्व का स्थान बन गया। यह फीनिक्स स्टेशन से ढाई मील और डरबन से चौदह मील दूर था। यहीं पर गांधी ने शिक्षा के अपने दर्शन को व्यवहार में लाना शुरू किया। फीनिक्स सेटलमेंट मूल रूप से 'इंडियन ओपिनियन' को चलाने के लिए था, जिसका एक प्रकाशन गांधीजी संपादक थे। लेकिन धीरे–धीरे कई सत्याग्रही गांधीजी के आदर्शों के साथ जीवन जीने के लिए अपने परिवारों के साथ गांधीजी की कुटिया में आ गए। बस्ती के बच्चों की संख्या लगभग तीस थी। उन्होंने न केवल साहित्यिक प्रशिक्षण प्राप्त किया बल्कि कृषि और मुद्रण पर व्यावहारिक निर्देश भी प्राप्त किए। उनसे अपेक्षा की जाती थी कि वे साफ–सुथरे परिवेश में रहें, पूरा दिन अपनी पढ़ाई और शारीरिक श्रम पर व्यतीत करें– खुद को खाना पकाने, बागवानी या किसी अन्य रचनात्मक कार्य में संलग्न करें। इस प्रकार, अपने घर के अलावा, जिसमें उन्होंने एक आदर्श वातावरण बनाए रखने की कोशिश की, फीनिक्स सेटलमेंट एक आदर्श स्कूल–सह–कार्यशाला भी साबित हुई, जिसमें सीखने का सिद्धांत और अभ्यास दोनों साथ–साथ चल सकते थे। यह इस समय था कि गांधीजी ने भारत के अपने भविष्य के शैक्षिक पुनर्निर्माण के बीज तैयार किए। यहीं पर उन्होंने शिक्षा के अपने विचारों का निर्माण किया, जो बाद में पूर्णता में विकसित हुए।

सत्याग्रह का जन्म

श्वेत शासक दक्षिण अफ्रीका को अपने आधिपत्य में रखने पर तुले हुए थे। वे वहाँ कुछ भारतीय चाहते थे, और वह भी दास–मजदूर के रूप में। ट्रांसवाल में, भारतीयों को अपना पंजीकरण कराना आवश्यक था। प्रक्रिया अपमानजनक थी। 1906 में पंजीकरण को सख्त बनाने का प्रस्ताव रखा गया था। गांधीजी ने महसूस किया कि यह भारतीयों के लिए जीवन या मृत्यु का मामला है। सितंबर 1906 में बिल का विरोध करने के लिए एक विशाल बैठक हुई। लोगों ने भगवान के नाम पर किसी भी कीमत पर बिल जमा नहीं करने की शपथ ली। एक नया सिद्धांत अस्तित्व में आया है – सत्याग्रह का सिद्धांत।

हालांकि पंजीकरण के बारे में विधेयक पारित किया गया था। नामांकन के विरोध में धरना दिया गया। भारतीय समुदाय में साहस और उत्साह की लहर दौड़ गई। भारतीय समुदाय अपने अस्तित्व और गरिमा के लिए एक व्यक्ति के रूप में उभरा।

आंदोलन को पहले 'निष्क्रिय प्रतिरोध' कहा गया। हालाँकि, गांधी को यह शब्द पसंद नहीं आया। इसने संघर्ष की वास्तविक प्रकृति को व्यक्त नहीं किया। इसका तात्पर्य यह था कि यह कमजोर और निहत्थे का हथियार था। यह अहिंसा में पूर्ण विश्वास को नहीं दर्शाता है। इसके अलावा, गांधी को यह पसंद नहीं था कि भारतीय संघर्ष को अंग्रेजी नाम से जाना जाए। 'सदाग्रह' शब्द का सुझाव दिया गया था। गांधी ने इसे पूरी तरह से, पूरे विचार का प्रतिनिधित्व करने के लिए इसे 'सत्याग्रह' में बदल दिया।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 10, October- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सत्याग्रह का अर्थ है अहिंसा के माध्यम से सत्य की पुष्टि करना। इसका उद्देश्य विरोधियों को आत्म–पीड़ा के माध्यम से परिवर्तित करना है। गांधीजी को कॉलोनी छोड़ने का आदेश दिया गया था। उसने अवज्ञा की और दो महीने के लिए जेल गया। भारतीयों ने जेलों को भर दिया। दमन परिणाम देने में विफल रहा। जनरल स्मट्स ने गांधी को फोन किया और वादा किया कि अगर भारतीय स्वैच्छिक पंजीकरण के लिए सहमत हुए तो कानून वापस ले लिया जाएगा। गांधीजी मान गए। उन्हें और उनके सहयोगियों को मुक्त कर दिया गया। गांधी ने भारतीयों को स्वेच्छा से पंजीकरण करने का आह्वान किया। हालांकि, स्मट्स ने गांधी को धोखा दिया। फिर से आंदोलन शुरू हो गया। प्रमाणित स्वैच्छिक पंजीकरणों को सार्वजनिक रूप से जला दिया गया था। इस बीच, ट्रांसवाल ने आव्रजन प्रतिबंध अधिनियम पारित किया। इसका भी भारतीयों ने विरोध किया था। उन्होंने अवैध रूप से ट्रांसवाल सीमा पार की, और उन्हें जेल में डाल दिया गया। गांधी को भी गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें दोषी ठहराया गया। दमन के बावजूद लड़ाई जारी रही।

टॉल्स्टॉय फार्म

1911 में, गांधीजी ने एक जर्मन सहकर्मी हरमन कालेनबाख की मदद और मार्गदर्शन से ट्रांसवाल में एक आश्रम शुरू किया और रूसी संत, काउंट लियो टॉल्स्टॉय के नाम पर इसे 'टॉल्स्टॉय फार्म' कहा। यहां विभिन्न धर्मों के लोग एक साथ कॉर्पोरेट निकाय के रूप में रहते थे। इनमें हिंदू, मुसलमान, पारसी और ईसाई लड़के और कुछ हिंदू लड़कियां भी थीं। जैसे–जैसे टॉल्स्टॉय फार्म का विकास हुआ, गांधी ने अपने लड़कों और लड़कियों की शिक्षा के लिए प्रावधान करना आवश्यक समझा। लेकिन किसी न किसी तरह, उन्होंने तत्कालीन मौजूदा शिक्षा प्रणाली को जारी रखने के लिए इच्छुक नहीं महसूस किया, जिसमें उनका बहुत कम विश्वास था। एक आंतरिक आग्रह से प्रेरित होकर, वे शिक्षा के क्षेत्र में अन्वेषण और खोज की यात्रा शुरू करना चाहते थे और प्रयोग द्वारा शिक्षा की सच्ची प्रणाली का पता लगाना चाहते थे। उन बच्चों के पितृ परिवार का स्थान ग्रहण किया। टॉल्स्टॉय फार्म की अपनी अजीबोगरीब विशेषताएं थीं, जिसने इसे महान प्रसिद्धि का हकदार बनाया। वास्तव में, यह उनके शैक्षिक प्रयोगों के लिए एक आदर्श प्रयोगशाला साबित हुई। यहां उन्होंने हमेशा की तरह दिल की संस्कृति, शिक्षा में चरित्र निर्माण को सबसे ज्यादा महत्व दिया। गांधीजी ने टॉल्स्टॉय फार्म के बच्चों के बच्चों की शिक्षा में साहित्यिक प्रशिक्षण की आवश्यकता की सराहना की और इसलिए, उन्होंने श्री कालेनबैक और अन्य की मदद से कुछ कक्षाएं शुरू कीं। उन्होंने बच्चों की भौतिक संस्कृति के महत्व को कम नहीं किया। यह उनकी दैनिक दिनचर्या में स्वतः ही शामिल हो गया। इस प्रकार टॉल्स्टॉय फार्म में लड़कों को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक प्रशिक्षण प्राप्त हुआ।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 10, October- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सत्याग्रह का अंतिम चरण

सत्याग्रह चार साल तक चला। गांधी ने 1910 में अपना कानूनी अभ्यास बंद कर दिया। कई उतार–चढ़ाव के बाद, सत्याग्रह का अंतिम चरण सितंबर 1913 में शुरू हुआ। भारतीयों पर तीन पाउंड कर लगाने वाले एक काले कानून ने इसके लिए अवसर प्रदान किया। सत्याग्रहियों ने कानून की अवहेलना करते हुए ट्रांसवाल सीमा पार की। यहां तक कि महिलाओं को भी शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया था। नेटाल की कोयला खदानों में काम करने वाले भारतीय मजदूरों ने हड़ताल की और संघर्ष में शामिल हो गए। गांधी ने इन कार्यकर्ताओं के एक बड़े दल का नेतृत्व किया। इनकी संख्या लगभग 2200 थी। यह एक महाकाव्य मार्च था। इसने पूरे इंग्लैंड और भारत में सत्याग्रह के प्रति सहानुभूति और दक्षिण अफ्रीकी सरकार के प्रति आक्रोश जगाया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने सत्याग्रह का समर्थन किया। गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया। सत्याग्रहियों ने अपने नेता के बिना नेटाल की ओर कूच किया। वहां उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। हजारों मजदूरों ने सहानुभूति के साथ काम किया। भारत में सार्वजनिक आक्रोश ने भारत सरकार को भारतीय कारणों के प्रति सहानुभूति व्यक्त करने के लिए मजबूर किया। दमन विफल होने पर, जनरल स्मट्स को अंततः झुकना पड़ा। भारत की मांगें मान ली गईं। लड़ाई खत्म हो गई थी। गांधी अब भारत लौट सकते थे जहां एक महान कार्य उनकी प्रतीक्षा कर रहा था।

यह दक्षिण अफ्रीका था जिसने गांधीजी को बनाया। वह एक युवा, शर्मीले, संक्षिप्त कम बैरिस्टर के रूप में वहां गया है। वे एक असाधारण नेता के रूप में लौटे, जिन्होंने एक अभूतपूर्व लड़ाई के लिए जनता को अभूतपूर्व सीमा तक लामबंद किया है। दक्षिण अफ्रीका में गांधी के विचारों को आकार दिया गया। वह रस्किन, टॉल्स्टॉय और थोरो से प्रभावित थे। उन्होंने वहां धर्म का गहन अध्ययन किया और अहिंसा में कट्टर विश्वासी बन गए। सत्याग्रह के सिद्धांत का जन्म दक्षिण अफ्रीका में हुआ था।

भारत में गांधीजीः नेतृत्व का उदय

गांधीजी हमेशा के लिए दक्षिण अफ्रीका छोड़कर जुलाई 1914 में भारत लौट आए। शुरुआत में वे नोबल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर के शांतिवन आश्रम में रहे। 1917 तक उन्होंने साबरमती नदी के तट पर सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की।

1917 में, गांधीजी ने चंपारण में नील बोने वालों के अधिकारों के लिए लड़ते हुए एक सफल सत्याग्रह अभियान का नेतृत्व किया। चंपारण भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। पहली बार शांतिपूर्ण तरीकों से गांधीजी ने घोषणा की कि अंग्रेज मुझे मेरे देश में आदेश नहीं दे सकते। साथ ही,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 10, October- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

उन्होंने वर्तमान जनता की शक्ति का दोहन किया और उनकी गरिमा और आत्मनिर्भरता की भावना को जगाया।

1918 में, गांधीजी ने अहमदाबाद के कपड़ा मिल श्रमिकों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी। यहां उन्होंने पहली बार मध्यस्थता–उपवास का एक तरीका पेश किया। गांधीजी ने महसूस किया कि इस पद्धति ने हिंसा और मजबूरी को समाप्त कर दिया, जो शांतिपूर्ण संघर्ष भी पेश कर सकता है। गांधीजी ने कहा, 'मैंने प्यार करने वालों को सुधारने के लिए उपवास किया।' काफी मशक्कत और बातचीत के बाद मिल मालिकों ने मांगों पर सहमति जताई।

मार्च 1918 में गांधी जी ने खेड़ा के किसानों के लिए सत्याग्रह का नेतृत्व किया। अप्रैल में, उन्होंने बर्बर रॉलेट एक्ट के अधिनियमन की रक्षा करते हुए एक राष्ट्रव्यापी हड़ताल की अपील की। हालाँकि, हिंसा भड़क उठी और पहली बार गांधीजी को सत्याग्रह को हिमालय की गलत गणना बताते हुए स्थगित करना पड़ा। गांधीजी ने महसूस किया कि शांतिपूर्ण आंदोलन का नेतृत्व केवल प्रशिक्षित सत्याग्रही (अहिंसक सैनिक) ही कर सकते हैं।

1920 में, गांधीजी ऑल इंडिया होम रूल लीग के अध्यक्ष चुने गए। दृष्टि में कोई स्वतंत्रता नहीं होने के कारण, उन्होंने असहयोग के सत्याग्रह अभियान के लिए एक प्रस्ताव का आग्रह किया। गांधीजी ने 1922 में बारडोली में सामूहिक सविनय अवज्ञा के एक प्रयोग का फैसला किया। चौरी चौरा में हिंसा के फैलने के कारण उन्हें अभियान को स्थगित करना पड़ा। इसके बाद, उन्हें 'यंग इंडिया' में देशद्रोही लेखों के लिए गिरफ्तार किया गया था। न्यायाधीश ब्रूमफील्ड के अधीन अहमदाबाद में 'महान मुकदमे' में गांधीजी को छह साल जेल की सजा सुनाई गई थी।

1929 में असहयोग आंदोलन के तहत विदेशी कपड़ा जलाने के आरोप में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। दिसंबर में, लाहौर में कांग्रेस के अधिवेशन ने पूर्ण स्वतंत्रता के लिए मतदान किया। 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस के रूप में प्रस्तावित किया गया था और गांधीजी ने तीसरा अखिल भारतीय 'सत्याग्रह अभियान' शुरू किया था।

12 मार्च 1930 को, 61 वर्षीय गांधी, साबरमती से 79 सत्याग्रहियों के साथ ऐतिहासिक नमक यात्रा पर दांडी के लिए रवाना हुए। गांधीजी और उनके अनुयायियों ने 'नापाक' नमक अधिनियम की अवहेलना करने के लिए 24 दिनों में 100 मील की दूरी तय की। इस तरह के प्रचारित अवज्ञा के लिए कल्पना और गरिमा की आवश्यकता होती है। तकनीकी रूप से, कानूनी तौर पर कुछ भी नहीं बदला था, सिवाय

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 10, October- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

इसके कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद को नैतिक हार का सामना करना पड़ा। गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया और बिना मुकदमे के जेल भेज दिया गया।

1931 जनवरी तक, उन्हें बिना शर्त रिहा कर दिया गया और मेरे मार्च में उन्होंने ऐतिहासिक गांधी–इरविन समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसने बड़े पैमाने पर सविनय अवज्ञा या असहयोग को भी समाप्त कर दिया। अगस्त तक, वह दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए लंदन के लिए रवाना हुए। इंग्लैंड से लौटने के बाद, गांधीजी ने सत्याग्रह अभियान का नवीनीकरण किया, जो चौथा राष्ट्रव्यापी प्रयास था।

1932 में, व्यापक विरोध के खिलाफ, गांधीजी ने अछूतों को अलग निर्वाचक मंडल देने की ब्रिटिश कार्रवाई का विरोध करते हुए अपना 'मृत्यु पर उपवास' शुरू किया। अंग्रेजों द्वारा 'यरवदा पैक्ट' स्वीकार करने के बाद अनशन समाप्त हो गया।

1933 तक गांधीजी ने सत्याग्रह आश्रम को भंग कर दिया और इसे अस्पृश्यता निवारण के केंद्र में बदल दिया। फिर उन्होंने अस्पृश्यता को समाप्त करने में मदद करने के लिए भारत का दौरा किया। उन्होंने अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ की भी स्थापना की।

१९४० में, गांधीजी ने एक व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा अभियान शुरू करके भारतीयों को द्वितीय विश्व युद्ध के बारे में अपनी राय व्यक्त करने की अनुमति देने से ब्रिटेन के इनकार का विरोध किया, जिसके संबंध में २३,००० लोगों को गिरफ्तार किया गया था। वर्ष 1942 था और 'पूर्ण स्वराज' (पूर्ण स्वतंत्रता' अभी भी दृष्टि में नहीं थी। कांग्रेस ने 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पारित किया– गांधीजी के नेता के रूप में अंतिम राष्ट्रव्यापी 'सत्याग्रह अभियान'। अभियान शुरू होने से पहले। , गांधीजी सहित सभी कांग्रेस नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया था। उन्हें आगा खान पैलेस में कैद कर दिया गया था, जहां गांधीजी ने वायसराय और भारतीय नेताओं के बीच गतिरोध को समाप्त करने के लिए अपना उपवास शुरू किया था। 22 फरवरी को, उनकी 74 वर्षीय पत्नी कस्तूरबा की जेल में मृत्यु हो गई थी। मई तक, गांधीजी थे स्वास्थ्य में गिरावट के कारण बिना शर्त जेल से रिहा हुआ। यह उनका अंतिम कारावास था। गांधीजी अपने जीवनकाल में पहले ही 2,338 दिन जेल में बिता चुके थे।

1946 में, 77 वर्ष की आयु में, गांधीजी ने प्रांतीय सरकार में मुस्लिम प्रतिनिधित्व पर सांप्रदायिक दंगों को दबाने के लिए पूर्वी बंगाल के 49 गांवों के अपने चार महीने के दौरे की शुरुआत की। बाद के वर्ष में, उन्होंने हिंदू–मुस्लिम तनाव को कम करने के लिए बिहार की यात्रा भी की।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 10, October- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

हालांकि गांधीजी ने लॉर्ड माउंटबेटन और जिन्ना के साथ बातचीत में भाग लिया, लेकिन उन्होंने भारत और पाकिस्तान में देश के विभाजन का विरोध किया। हालाँकि, देश का विभाजन हुआ और भारत को स्वतंत्रता प्रदान की गई। दंगे भड़क उठे। लोगों को दंगा करने से रोकने के लिए गांधीजी ने प्रार्थना की, उपवास किया और बड़े पैमाने पर यात्रा की।

1946 के बाद गांधीजी के प्रयास हिंदू–मुस्लिम एकता के लिए समर्पित थे। जिन्ना ने 16 अगस्त 1946 को प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस के रूप में घोषित किया। यह कभी स्पष्ट नहीं किया गया कि इसमें क्या शामिल है। हालाँकि, मुसलमानों ने इस आह्वान का प्रतिशोध के साथ जवाब दिया। इसके बाद कलकत्ता की महान हत्याएं हुईं। गांधीजी ने शांति बहाल करने के लिए नोआखाली और अन्य क्षेत्रों का दौरा किया। 1948 में, गांधीजी ने देश में सांप्रदायिक शांति लाने के लिए 5 दिनों का उपवास रखा। 30 जनवरी 1948 को दिल्ली में एक प्रार्थना सभा के दौरान एक हिंदू कट्टरपंथी विनायक नाथूराम गोडसे ने गांधी जी की गोली मारकर हत्या कर दी थी। इस प्रकार शांति के सबसे महान प्रेरित का घटनापूर्ण जीवन समाप्त हो गया जिसे दुनिया ने कभी देखा था।

महात्मा गांधी के सामान्य दर्शन

विभिन्न कारकों, अवसरों और व्यक्तित्वों ने गांधी जी के जीवन को अत्यधिक प्रभावित किया है। शुरुआती दिनों में उनकी मां की पवित्रता और नैतिकता ने उन्हें काफी प्रभावित किया। अपने बचपन के दिनों में, जब उन्होंने हरिश्चंद्र का नाटक देखा, तो वे जीवन में सच्चाई का पालन करने के लिए बहुत प्रभावित हुए, चाहे उनके रास्ते में कुछ भी आए। उनकी नर्स द्वारा बोए गए रामनाम के बीज, रंभा नाम के परिवार के एक पुराने नौकर ने उनके व्यक्तित्व को बहुत प्रभावित किया है। जब गांधीजी तेरह वर्ष के थे, तब लाधा महाराज द्वारा अपने पिता के सामने रामायण पढ़ने से उन पर गहरी छाप पड़ी। उसके बाद, उन्होंने तुलसीदास की रामायण को सभी भक्ति साहित्य में सबसे महान पुस्तक माना। वह बुद्ध और महावीर के उपदेश और उपदेश के सार से प्रभावित थे, जिसने अहिंसा के विचार पर जोर दिया।

लंदन में अपने प्रवास के दौरान, अपने दो थियोसोफिस्ट मित्रों की सलाह पर उन्होंने सर एडविन अर्नोल्ड के गीता का अनुवाद 'द सॉन्ग सेलेस्टियल' नाम से पढ़ा। पुस्तक को पढ़ने के बाद गांधीजी ने अपने शब्दों में कहा, "पुस्तक ने मुझे एक अमूल्य मूल्य के रूप में मारा। तब से मुझ पर यह प्रभाव बढ़ता जा रहा है कि मैं आज इसे सत्य के ज्ञान के लिए सर्वोत्कृष्ट पुस्तक मानता हूं। इसने मुझे मेरे निराशा के क्षणों में अमूल्य मदद प्रदान की है। " साथ ही उन्होंने सर एडविन अर्नोल्ड की 'द लाइट ऑफ एशिया', मैडम ब्लावात्स्की की 'की टू थियोसोफी' भी पढ़ी। बाइबिल का नया नियम विशेष रूप से पर्वत

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 10, October- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

पर उपदेश, भगवद्गीता, कुरान और हिंदू धर्म पर अन्य पुस्तकों ने उनके जीवन और धर्म के दर्शन को गहराई से प्रभावित किया।

उनके जीवन दर्शन पर पुस्तकों के अलावा अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों का भी अमिट प्रभाव पड़ता है। गांधी जी ने स्वयं हमें बताया है कि तीन महान आधुनिकों का उनके जीवन पर गहरा प्रभाव है और उन्होंने उन्हें मोहित कर लिया। अपने जीवित संपर्क से रायचंदभाई; टॉल्स्टॉय ने अपनी पुस्तक, 'द किंगडम ऑफ गॉड इज विदिन यू' और रस्किन द्वारा अपनी 'अनटू दिस लास्ट' द्वारा। उन्होंने जीवन और शिक्षा के उनके दर्शन पर एक रचनात्मक प्रभाव डाला। जब गांधीजी का अपने कानूनी अभ्यास से मोहभंग हो गया, तो उनका परिचय उनके मित्र डॉ. पी.जे. मेहता ने गुजराती कवि और दार्शनिक, रायचंदभाई या राजचंद्र से कराया, जो "महान चरित्र और विद्वान व्यक्ति" थे। रायचंदभाई सत्य के सच्चे साधक थे। गांधीजी को बाद में विभिन्न धर्मों के प्रमुखों से मिलने का अवसर मिला, लेकिन अपने स्वयं के शब्दों को उद्धृत करने के लिए, "किसी और ने मुझ पर कभी ऐसा प्रभाव नहीं डाला जैसा रायचंदभाई ने किया था। उनकी बुद्धि ने मुझे उनकी नैतिक ईमानदारी के रूप में महान सम्मान के लिए मजबूर किया, और मेरे अंदर गहराई में यह विश्वास था कि वह कभी भी स्वेच्छा से मुझे गुमराह नहीं करेंगे और हमेशा अपने अंतरतम विचारों को मुझे बताएंगे। मेरे आध्यात्मिक संकट के क्षणों में, इसलिए, वह मेरी शरणस्थली थे। " रायचंद भाई के लिए इस सम्मान के बावजूद, गांधीजी उन्हें अपने गुरु के रूप में अपने दिल में स्थापित नहीं कर सके, लेकिन फिर भी बाद वाले कई मौकों पर उनके मार्गदर्शक और सहायक थे। वह सत्य और अहिंसा के प्रवर्तक थे और हम कह सकते हैं कि उन्होंने गांधीजी के सत्य और अहिंसा के दर्शन को ढालने में कोई छोटी भूमिका नहीं निभाई, जिसने बाद में उनके जीवन और शिक्षाओं को प्रभावित किया। इन दो सिद्धांतों ने उनके शैक्षिक सिद्धांत को भी प्रभावित किया है, जो "अहिंसा से उत्पन्न होता है"।

महात्मा गांधी के दार्शनिक सिद्धांत

गांधीजी ने जो शैक्षिक सिद्धांत प्रतिपादित किए, वे उनके सामान्य और सामाजिक दर्शन से निकले। शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण की तकनीक, शिक्षा का वित्तीय पहलू और पूरे देश के लिए शैक्षिक योजना, ये सभी उनके जीवन दर्शन द्वारा निर्देशित थे। इसलिए, उनके जीवन दर्शन की पूर्व चर्चा उनके शैक्षिक सिद्धांतों के बेहतर परिप्रेक्ष्य के लिए आवश्यक है। महान विचारक और शिक्षा सुधारक गांधीजी का अपना जीवन दर्शन था। महात्मा गांधी की सभी महानता का केंद्र उनके जीवन का दर्शन है, गहरा और गहरा, आदर्शवादी और अध्यात्मवादी सिद्धांतों से संतृप्त। वह एक व्यावहारिक दार्शनिक थे जो सिद्धांत बनाने में नहीं बल्कि व्यावहारिक क्षेत्रों में सभी आदर्शवादी सिद्धांतों को लागू करने में विश्वास

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 10, October- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

करते थे, उन्होंने वकालत की। यद्यपि गांधी ने जीवन के हर पहलू पर कई गुना विचार तैयार किए– ईश्वर, सत्य, अहिंसा, श्रम की गरिमा, नैतिक समाज सबसे महत्वपूर्ण हैं। उनके कुछ प्रमुख दार्शनिक सिद्धांत इस प्रकार हैं:

महात्मा गांधी के सामाजिक विचार

गांधीजी सत्य, अहिंसा, न्याय, समानता और सार्वभौमिक भाईचारे पर आधारित एक नैतिक समाज का निर्माण करना चाहते थे। नैतिक समाज को प्राप्त करने के लिए वे लोकतंत्र और समाजवाद चाहते थे लेकिन मार्क्सवादी प्रकार का समाजवाद नहीं चाहते थे। उन्होंने विकेंद्रीकरण और जीवन के उच्च मूल्यों की वकालत की। उनका मिशन एक वर्गहीन समाज का निर्माण करना था जहाँ अनुचित साधनों से धन का शोषण और संचय न हो। लाखों गरीबों की दयनीय स्थिति ने उन्हें बहुत पीड़ा दी। इसलिए, वह चाहते थे कि राजनीतिक और सामाजिक समानता के साथ भारत को आर्थिक समानता के लिए प्रयास करना चाहिए। उन्होंने प्रतिस्पर्धा के बजाय सेवा और सहयोग पर जोर दिया। गांधीजी का मानना था कि एक वर्गहीन समाज में ही निरपेक्ष (ईश्वर) की अनुभूति की जा सकती है। नैतिक बल और नैतिक स्वीकृ ति ऐसे समाज के मार्गदर्शक कारक होंगे। गांधी जी का दृढ़ विश्वास था कि विकेन्द्रीकरण से गाँवों को प्रोत्साहन मिलेगा और ग्रामोद्योग और धन का समान वितरण। शहरों द्वारा गांवों का शोषण किया जा रहा था। ग्राम उत्थान उनके जीवन का मिशन था। इसलिए, वह शोषण को समाप्त करना चाहता था। उन्होंने महिलाओं के लिए समान अधिकार की वकालत की। वह कहते हैं, "महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त होंगे।" गांधीजी द्वारा परिकल्पित नैतिक समाज में, ईश्वर और समुदाय की सेवा सबसे बड़ा पंथ था। एसीसी उनके लिए, "मनुष्य का अंतिम लक्ष्य ईश्वर की प्राप्ति है।" अतः मनुष्य की समस्त गतिविधियाँ–सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, इसी एक उद्देश्य से प्रेरित होनी चाहिए। अतः सभी की सेवा प्रत्येक मनुष्य का प्रथम मूलाधार होना चाहिए। भगवान, गांधीजी ने कहा, मंदिर, चर्च और मस्जिद में होने के बजाय, मानवता के मंदिर में पाया जाना है। इस प्रकार, गांधीजी सत्य और अहिंसा पर आधारित एक नई सामाजिक व्यवस्था बनाना चाहते थे। ऐसे अहिंसक समाज में सत्य और अहिंसा के माध्यम से व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सामाजिक संयम के साथ समेटा जाएगा। गांधी जी 'करम योगी' थे। वह कर्मों में विश्वास करता था लेकिन शब्दों में नहीं। उन्होंने शारीरिक श्रम पर जोर दिया, जिसे तत्कालीन तथाकथित परिष्कृत समाज ने नीचा दिखाया। इस प्रकार, उन्होंने शारीरिक श्रम के लिए अपनी बुनियादी शिक्षा योजना में शिल्प को शामिल किया।

निष्कर्ष

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 10, October- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

व्यक्तित्व का सामंजस्यपूर्ण विकास या प्रकृति की पूर्णता एक और उद्देश्य है जिसकी गांधीजी वकालत करते हैं। एसीसी इस दृष्टिकोण से, हमारी विभिन्न जन्मजात और अर्जित शक्तियों को इस प्रकार प्रशिक्षित किया जाना चाहिए कि उन सभी शक्तियों का सामंजस्यपूर्ण विकास हो सके। यह उद्देश्य गांधीजी की शिक्षा की अवधारणा के साथ अच्छी तरह से मेल खाता है– "बच्चे और मनुष्य– शरीर, मन और आत्मा में सर्वश्रेष्ठ का एक सर्वांगीण चित्रण"। गांधीजी ने 3आर (पढ़ने, लिखने और अंकगणित) की तुलना में 3 एच (हाथ, दिल और सिर) पर अधिक जोर दिया। एसीसी उसके लिए, मन और शरीर के विकास को आत्मा के तदनुरूपी जागरण के साथ–साथ चलना चाहिए ताकि इसे (शिक्षा) को केवल एकतरफा मामले में कम करने से बचाया जा सके। यह केवल एक पूर्ण विकास है जो हमें एक संपूर्ण मनुष्य दे सकता है।

इस उद्देश्य के आलोक में हम आसानी से देख सकते हैं कि वर्तमान शिक्षा किस प्रकार एकतरफा है। यह मुख्य रूप से मन के प्रशिक्षण में शामिल है। आत्मा के साथ–साथ हृदय का प्रशिक्षण आवश्यक है, क्योंकि इससे भावनाओं और आवेगों का शोधन हो सकता है; यह प्रेम, सहानुभूति और संगति की हमारी गहरी भावनाओं को जगा सकता है– वे गुण जो अहिंसा का निर्माण करते हैं। गांधीजी का दावा है कि यह सामंजस्यपूर्ण रूप से विकसित व्यक्ति है जो इस जीवन और पर्यावरण को समायोजित करता है। बेशक, जब गांधीजी 'हृदय' की शिक्षा की बात कर रहे थे, तो इसका मतलब भावनाओं या भावनाओं के शोधन के लिए शिक्षा थी, जो मानव मस्तिष्क के थैलेमस क्षेत्र में निकलती है और इसका शारीरिक हृदय से कोई लेना–देना नहीं है।

संदर्भ सूची

- जाखड़, जे.एस. (2016)। 'शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2016: कार्यान्वयन की मुख्य विशेषताएं और प्रमुख समस्याएं', नई दिल्ली: विश्वविद्यालय समाचार, 48(47) 22–28।
- झा, जे. और झिंगरान, डी. (2016)। 'सबसे गरीब और अन्य वंचित समूहों के लिए प्राथमिक शिक्षा: सार्वभौमिकरण की वास्तविक चुनौती', नई दिल्ली: नीति अनुसंधान केंद्र।
- झा, प्रवीण और पार्वती, पूजा। (2016)। 'इंडियाज ट्रिस्ट विद एलीमेंट्री एजुकेशन इन द टाइम ऑफ रिफॉर्म्स: पॉलिसी कॉन्स्ट्रेंट्स एंड इंस्टीट्यूशनल गैप्स', बैंगलोर: बुक्स फॉर चेंज।
- झा, प्रवीण और पार्वती पूजा। (2016)। 'इंडियाज ट्रिस्ट विद एलीमेंट्री एजुकेशन इन द टाइम ऑफ रिफॉर्म्स', बैंगलोर: बुक्स फॉर चेंज।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 10, October- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

- जोसफिन, यज़ाली (संकलित) (2016)। 'वैश्वीकरण और शिक्षा के लिए चुनौतियां', एनआईईपीए, दिल्लीः शिप्रा प्रकाशन।
- कालरा, राजिंदर एम. (2016)। 'स्कूलों में मूल्य–उन्मुख शिक्षाः सिद्धांत और व्यवहार', दिल्लीः शिप्रा प्रकाशन।
- किम, एस.के. (2016)। 'द फिलॉसॉफिकल थॉट्स ऑफ महात्मा गांधी', नई दिल्लीः विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लिमिटेड
- किंगडन, जी. (2016)। 'भारत में निजी स्कूली शिक्षाः आकार, प्रकृति और समानता प्रभाव', आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 31(51) 3306–14।
- कोठारी, सी.आर. (2016)। 'रिसर्च मेथडोलॉजीः मेथड्स एंड टेक्निक्स', नई दिल्लीः न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स।
- कौल, लोकेश (2016). 'शैक्षिक अनुसंधान की पद्धति', नई दिल्लीः विकास पब्लिशिंग हाउस।
- कृपलानी, कृष्णा (2016)। 'गांधीः ए लाइफ', नई दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट।
- कृपलानी, जे.बी. (2016)। 'गांधीः हिज लाइफ एंड थॉट', प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्लीः भारत सरकार।
- कृष्णमचार्युलु, वी. (2016)। 'प्राथमिक शिक्षा', हैदराबादः नीलकमल प्रकाशन प्रा। लिमिटेड
- कुमार, रवि (सं.) (2015)। 'द क्राइसिस ऑफ एलीमेंट्री एजुकेशन इन इंडिया', नई दिल्लीः सेज पब्लिकेशन।
- कुरहाडे, एम.एस. (2015)। 'सभी के लिए शिक्षाः लेकिन कब?', नई दिल्लीः विश्वविद्यालय समाचार, 49(04) 24–30।
- लेक्लर्कक, एफ। (2015)। 'शिक्षा गारंटी योजना और मध्य प्रदेश में प्राथमिक शिक्षा', आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 38(19)1855–69।
- एनसीईआरटी (2015)। 'महात्मा गांधी के जीवित विचार', नई दिल्लीः एनसीईआरटी।
- लूथर, एम.एम. (2015)। 'स्कूल शिक्षा में मूल्य और नैतिकता', नई दिल्लीः टाटा मैकग्रा हिल पब्लिशिंग कंपनी।